प्रातः क्लास 18-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप आकर तुम रूहानी बच्चों को क्या कहते हैं, क्या सेवा करते हैं, इस समय में इस पढ़ाई कीसेवा करते हैं। यह भी तुम जानते होउनका बाप का भी पार्ट है, टीचर का भी पार्ट है और सद्गुरू काभी पार्ट है। तीनों पार्ट अभी बजा रहे हैं। तुम बच्चे जानते हो वह बाबा भी है, टीचर भी है सदगति देने वाला गुरू भी है। और सभी के लिये है। छोटे बड़े बूढ़े जवान सभी के लिये एक ही है। सुप्रीम बाप सुप्रीम टीचर है। बेहद की शिक्षा देते हैं। तुम कानफ्रेन्स भी समझा सकते हो कि हम सभी के बायोग्राफी को जानते हैं। परम पिता परमात्मा शिव बाबा की जीवन-कहानी को भी जानते हैं। नम्बरवार सभी की बुधि में याद होनी चाहिए। सारा विराटरूप जरूर बुधि में रहता है। हम अभी ब्राहमण बने हैं फिर हम देवता बनेंगे। वैश्य शुद्र बनेंगे। यह तो बच्चों को याद है ना। सिवाय तुम बच्चों के और किसको यह बातें याद न होंगी। उत्थान और पतन का सारा राज बुधि में रहे। हम उत्थान में थे। फिर पतन में आये। अभी बीचमें हैं। शुद्र भी नहीं हैं, ब्राहमण भी नहीं हैं। पूरे ब्राहमण नहीं बने हैं। अगर अभी ब्राहमण बने हो तो फिर शुद्रपने की एक्ट न हो। ब्राहमण हो भी शुद्रपने की छी छी अवस्था हो जाती है। स्मृति में वह शुद्रपना आ जाता है। यह भी तुम जानते हो कल से पाप शुरू किये हैं। जब से काम चिक्षा पर चढ़े हो। तो तुम्हारी बुधि में सारा चक्र है। ऊपर में है परमपिता परमात्मा। बाप। फिर तुम आत्मायें हो। यह बातें तुम बच्चों की बुधि में जरूर याद रहनी चाहिए। अभी हम ब्राहमण बने हैं। देवता बन रहे हैं फिर क्षत्री डिनायस्टी में आवेंगे। फिर वैश्य शुद्र डिनायस्टी में आवेंगे। बाप आकर हमको शुद्र से ब्राहमण बनाते हैं। फिर हम ब्राहमण से देवता बनेंगे। ब्राहमण बनकर कर्मातीत अवस्था को पाये फिर हम वापस जावेंगे। तुम बाप को भी जानते हो, बाजोली वा 84 के चक्र को भी जानते हो। बाजोली से तुमको बहुत सहज कर समझाते हैं। तुमको बहुत हल्का बनाते हैं। ताकि अपन को बिन्दी समझ और झट भागेंगे। स्टुडेन्ट क्लास में बैठे रहते हैं तो बुधि में स्टडी ही याद रहती है। तुम को भी यह पढ़ाई याद रहनी चाहिए। अभी हम संगम युग पर है फिर चक्र लगावेंगे। यह चक्र सदैव बुधि में फिरता रहना चाहिए। यह चक्र आदि का नालेज तुम ब्राहमणों पास ही है। न शुद्रों पास न देवताओं पास यह ज्ञान है। अभी तुम समझते हो भक्ति मार्ग में जो भी चीजें बनी है सभी डिफेक्टेड हैं। तुम्हारे पास है एक्युरेट। क्योंकि तुम एक्युरेट बनते हो। शास्त्रों में तो बहुत झूठी कहानियां लगा दी है। ऐसी2 बातें कोई होती थोड़ेही हैं। वह सभी है भक्ति मार्ग का खेल। अभी तुमको ज्ञान मिला है तब समझते हो भक्ति किसको कहा जाता है ज्ञान किसको कहा जाता है। ज्ञान देने वाला बाप ज्ञान सागर अभी मिला है। स्कूल में पढ़ते हैं एमआबजेक्ट का पता तो पड़ता है ना। भक्ति मार्ग में तो एमआबजेक्ट होता ही नहीं। यह थोड़ेही तुमको मालूम था हम देवता थे फिर नीचे गिरे हैं। अभी जब ब्राहमण बने हैं तब पता पड़ा है। ब्रह्माकुमार-कुमारियां जरूर आदि भी बनी थी। प्रजापिता ब्रह्मा का नाम तो बाला है ना। उनके इतने ढेर बच्चे हैं जरूर एडाप्ट होने चाहिए। कितने एडाप्टशन हैं। आत्मा के रूप में तो सभी भाई2 हैं? अभी तुम्हारी बुधि कितनी दुर जाती है। तुम जानते हो जैसे ऊपर में स्टार्स खड़े हैं दूर से कितनी छोटी दिखाई पड़ती है। तुम भी बहुत छोटी सी आत्मा हो। आत्मा कब छोटी बड़ी नहीं होती है। हां तुम्हारा मर्तबा ऊंच है। उनको भी सूर्य देवता चन्द्रमा देवता कहते हैं। सूर्य बाप चन्द्रमा मां कहेंगे। बाकी नक्षत्र सितारे ही सितारे हैं। तो आत्मायें सब एक जैसी छोटी सितारे हैं। यहां आकर पार्टधारी बनती है। यहपार्ट कब फिरता फिरता नहीं हैं। देवतायें तुम ही बनते हो ना। ज्ञान सूर्य ज्ञान चन्द्रमा ज्ञान सितारे। यह ज्ञान की बातें हैं। वहसूर्य चांद सितारे तो रोशनी देने वाले हैं। ज्ञान की बात नहीं। अभी तुमने मीठे2 बच्चे जानते हो हम बहुतपावरफुल बन रहे हैं। बुधि में आता है बाप को याद करने से हम सतोप्रधान देवता बन जावेंगे। आत्मायें तो सभी हैं परन्तु नम्बरवार थोड़ा2 फर्क तो रहता है कोई आत्मा पवित्र बन सतोप्रधान देवता बन जाती है कोई आत्मा पवित्र बनती नहीं हैं। ज्ञान को जरा भी

नहीं जानते। बाप ने समझाया है बाप का परिचय तो जरूर सभी को मिलना ही है। पिछाड़ी में बाप को तो जानेंगे ना। पिछाड़ी में सभी को पता पड़ता है बाप आया हुआ है। अभी भी कोई2 कहते हैं भगवान जरूर आया हुआ है। परन्तु पता नहीं पड़ता। समझते हैं कोई भी रूप में आवेगा। मनुष्यमत तो बहुत हैं ना। तुम्हारी है एक ही ईश्वरीयमत। तुम ईश्वरीमत से क्या बनते हो। एक है मनुष्य मत। ईश्वरीमत और देवता मत। देवताओं को यह मत किसने दी? बाप ने। बाप की श्रीमत है ही श्रेष्ठ बनाने की। श्री श्री बाप को ही कहेंगे। न कि मनुष्य को। श्री श्री ही आकर श्री बनाते हैं। देवताओं को श्रेष्ठ बनाने वाला बाप ही है। उनको श्री2 कहेंगे। बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसा लायक बनाता हूं। उन लोगों ने फिर अपने पर श्री श्री का टाईटल रख दिया है। कानफ्रेन्स में भी तुम समझा सकते हो। तुमही समझाने लिये निमित बने हुये हो। यह तमोप्रधान पतित मनुष्य वह फिर अपने ऊपर श्रीश्री का टाईटल रखाते हैं। श्रीश्री तो है ही एक शिवबाबा। जो ऐसा श्री देवता बनाते हैं। मनुष्य मनु को श्री भी नहीं कह सकते। आजकल तो बन्दरों को भी श्रीश्री का टाईटल दे दिया है। यह भी तुमको अभी समझ में आता है। तुमको तो बाप ऐसा श्रेष्ठ देवता बनाते हैं। वह लोग शास्त्रों आदि की पढ़ाई पढ़कर टाईटल लेते हैं। तुमको तो श्रीश्री बाप ही श्री अर्थात श्रेष्ठ बना रहे हैं। यह है ही तमोप्रधान भ्रष्टाचारी दुनिया। भ्रष्टाचार से ही जन्म लेते हैं। इसलिये गाया भी जाता है अंधेर नगरी चौपट ... घोर अंधियारा है ना। राजा आदि तो है नहीं। ज्ञान बिगर मनुष्य चर्ये बैडचैप्स हैं। कहां बाप का टाईटल कहां पतित मनुष्य अपने पर रखाते हैं। सच्च2 श्रेष्ठ महान आत्मायें तो देवी देवतायें हैं ना। सतोप्रधान दुनिया में कोई भी तमोप्रधान हो न सके। रजो में रजो मनुष्य ही रहेंगे। न कि तमोगुणी। वर्ण भी गाये जाते हैं। अभी तुम समझते होआगे तो हम कुछ भी नहीं समझते थे। यह बाबा कितना समझदार बनाते हैं। तुम कितना धनवान बनते हो। शिव बाबा का भण्डारा सदैव भरपूर है। शिव बाबा का भण्डारा कौन सा है? अविनाशी ज्ञान रत्नों का। शिव बाबा का भण्डारा भरपूर काल कण्टक दूर। बाप तो बच्चों को ज्ञान रत्न देते हैं। खुद है सागर। शिव बाबा का ज्ञान रत्नों का भण्डारा भरपूर है। तुमको ज्ञान रत्न देते हैं तो काल कण्टक सब दूर हो जाते हैं। बच्चों को बुद्धि बेहद में जानी चाहिए। 500 करोड़ आत्मायें हैं। वह सभी अपने2 रूप में तख्त पर विराजमान हैं। यह बेहद का नाटक है ना। आत्मा इस तख्त पर विराजमान होती है। तख्त एक न मिले दूसरे से। सभी के फिचर्सलग2 हैं। इनको कहा जाता है कुदरत। हरेक का कैसा अविनाशी पार्ट है। इतनी छोटी सी आत्मा में 84 जन्मों का रिकार्ड भरा हुआ है। सूक्ष्म ते सूक्ष्म है। इनसे सूक्ष्म बन्डर कोई हो नहीं सकता। इतनी छोटी सी आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। जो यहां ही पार्ट बजाते हैं। सूक्ष्मवतन में तो कोई पार्ट बजाते ही नहीं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। बाप द्वारा तुम सभी कुछ जान जाते हो। यही नालेज है। ऐसे नहीं कि सभी के अन्दर की जानने वाला है। वही नालेज जानते हैं जो तुम्हारे में भी भर्ज हो रही है। जिस नालेज ही तुम इतना ऊंच पद पाते हो। यह भी याद रहती है ना। बाप है बीज रूप। उनमें सारी झाड़ के आदि मध्य अन्त का नालेज है। मनुष्यों ने तो लाखों वर्ष आयु दे दी है। तो ज्ञान आ न सके। अभी तुमको संगम पर यह सारा ज्ञान मिल रहा है। बाप द्वारा तुम सारे चक्र को जान जाते हो। इनके पहले तुम कुछ नहीं जानते थे। अभी तुम संगम पर हो। यह है तुम्हारा अन्त का जन्म। पुरुषार्थ करते2 तुम ब्राह्मण बन जावेंगे। अभी नहीं हो। अभी तो अच्छे2 बच्चे भी ब्राह्मण से फिर शूद्र बन जाते हैं। इसको कहा जाता है माया से हार खाना। बाबा के गोद से भरकर माया रावण के गोद में चले जाते हैं। कहां बाप की श्रेष्ठ बनने की गोद कहां रावण की भ्रष्ट बनने की गोद। सेकण्ड में जीवनमुक्ति तो सेकण्ड में पूरी दुर्दशा हो जाती है। ब्राह्मण बच्चे अच्छी रीत जानते हैं कैसे दुर्दशा हो जाती है। आज बाप के बनते कल फिर माया के सपोट में आकररावण के बन जाते हैं। फिर तुम बचाने की कोशिश करते हो। तो कोई कोई बच भी जाते हैं। तुम देखते हो -

१८-१२-६८

डूबोते हैं तो बचाने की कोशिश करते हो। कितनी खिट2 होती हैं। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। यहां स्कूल में तुम पढ़ते हो ना। तुमको मालूम है कैसे हम चक्र लगाते हैं। तुम बच्चों को श्रीमत मिलती है ऐसे ऐसे करो। भगवानुवाच तो जरूर इनकी श्रीमत हुई ना। मैं अभी तुम बच्चों को शुद्र से देवता बनाने आया हूं। अभी कलियुग में है शुद्र सम्प्रदाय। तुम जानते हो कलियुग पूरा हो रहा है। तुम संगम पर बैठे हो। यह बाप द्वारा तुमको नालेज मिली है। शास्त्र जो भी बनाई है इन सभी में है मनुष्य की मत। ईश्वर तो शास्त्र बनाते ही नहीं। एक गीता के ऊपर ही कितने नाम रख दिये हैं। गांधी गीता, टैगोर गीता ... ढेर नाम हैं। गीता को मनुष्य इतना क्यों पढ़ते हैं। समझते तो कुछ भी नहीं हैं। अध्याया वही उठाकर अर्थ अपना करते हैं। वह तो सभी मनुष्यों की बनाई हुई हो गई ना। तुम कह सकते हो मनुष्य मत की बनाई हुई गीता से भारत का पतन होता है। श्रीमत से मनुष्य से देवता बन सकते हो। मनुष्यों की बनाई हुई गीता पढ़ने से आज यह हाल हुआ है। गीता ही पहला नम्बर का शास्त्र है ना। वह है देवता धर्म का शास्त्र। यह तुम्हारा ब्राह्मण कुल का है। यह भी ब्राह्मण धर्म है ना। कितने धर्म हैं। जिस जिस ने जो धर्म रचा है उनका वह नाम चलता है। जैसे जैनीधर्म। चित्र तो वही है। जिसे जैनी लोग महावीर कहते हैं। तुम बच्चे हो महावीर महावीरणियां। हो। तुम्हारा ही मंदिर में यादगार है। राजयोग है ना। यह तो बहुत सहज है। नीचे योग तपस्या में बैठे हैं। ऊपर में राजाई का चित्र है। राजयोग का स्क्युरेट मंदिर है। फिर कोई ने क्या नाम रख दिया है कोई ने क्या नाम रख दिया है। यादगार है बिल्कुल स्क्युरेट। बुधि से काम ले ठीक बनाया है। फिर जिस ने जो कहा वह नाम रख दिया है। यह माडल रूप में बनाया है। स्वर्ग और राजयोग संगम का बनाया हुआ है। स्वर्ग तो मनुष्यों को इन आंखों से देखने में नहीं आता है तो देवी देवताओं को चित्रों में दिखाया है। तुम आदि मध्य अन्त को जानते हो। आदि को भी तुमने देखा है आदि संगम युग कहो या सतयुग कहो। संगम युग की हिस्ट्री नीचे दिखाई है। फिर राजाई ऊपर में दिखाई है। आदि फिर मध्य में है द्वापर। अन्त को तो तुम देखते हो यह भी खत्म हो जाना है। पूरी यादगार बनी हुई है। देवी देवतायें ही फिर वाम मार्ग में जाते हैं। द्वापर से वाममार्ग शुरू होता है। तो यादगार पूरा स्क्युरेट है। बहुत मंदिर हैं। यादगार में बहुत मंदिर बनाये हैं। यहां ही सभी निशानियां हैं। मंदिर भी यहां ही बनते हैं। देवी देवतायें भारतवासी ही राज्य कर के गये हैं ना। फिर बाद में कितने मंदिर बनाई है। सिक्ख लोग बहुत होंगे तो अपना मंदिर बना देंगे। मिलिट्री वाले भी अपना मंदिर बना देते हैं। भारतवासी अपने कृष्ण का ल०ना० का मंदिर बनावेंगे। हनुमान गणेश का बनावेंगे। यह सारा सृष्टि चक्र कैसे फिरता है कैसे स्थापना पालना विनाश होती है यह भी तुम जानते हो। इसको कहा जाता है अंधियारी रात। रात और दिन गाया जाता है ना। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात। क्योंकि ब्रह्मा ही चक्र में आते हैं। अभी तुम ब्राह्मण हो फिर देवता, क्षत्री वैश्य शुद्र बनेंगे। मुख्य तो ब्रह्मा हुआ ना। ब्रह्मा का रखें वा विष्णु का रखें। ब्रह्मा रात है रात का, विष्णु है दिन का। वह रात से फिर दिन में आते हैं। दिन से फिर 84 जन्मों बाद रात में आते हैं। कितनी सहज समझानी है। सो भी पूरा याद नहीं कर सकते। पूरी रीत नहीं पढ़ते हैं। तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पद पाते हैं। जितना याद करेंगे उतना ही सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान से तमोप्रधान में कैसे आते हैं फिर सतोप्रधान कैसे बनते हैं यह समझने का है। भारत सतोप्रधान सो फिर भारत तमोप्रधान। बच्चों में कितना ज्ञान है। यह नालेज सिमरण करनी है। यह ज्ञान है ही नई दुनिया के लिये। जो बेहद का बाप ही आकर देते हैं। बेहद के बाप को जानते ही नहीं हैं। तो जानवर ठहरे ना। देहधारी बाप को तो सभी जानते हैं। सभी मनुष्य बेहद के बाप को याद करते हैं। अंग्रेज लोग भी कहते हैं ओ गाड फादर। लिबरेटर गाईड। अर्थ तो तुम बच्चों की बुधि में है। बाप आकर दुःख की दुनिया आयरन एज से निकाल कर गोल्डेन एज में ले जाते हैं। गोल्डेन एज जरूर पास हो कर गये हैं तब तो याद करते हैं ना। तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी रहनी चाहिए। और फिर

देवी कर्म भी करनी चाहिए। कोई भी आसुरी कर्म करेंगे तो मनुष्य मानेंगे ही नहीं। कहेंगे करते क्या हैं समझाते क्या हैं। अभी सभी हैं आसुरी मनुष्य। तुमको देवताओं जैसा बनना है। तुम बच्चों को खुशी भी होती है। अभी हम अपने घर जावेंगे। फिर अपनी राजधानी में आवेंगे। 84 जन्मों का चक्र लगाकर फिर पतित बनना है। फिर बाप आकर पावन बनाते हैं। उनको कहा ही जाता है सतयुग। पावन दुनिया। इनको कहा जाता है कलियुग पतित दुनिया। बदली होने का समय अभी संगम युग है। इनका ही तुम बच्चों का ही पता है। इन बातों को समझेंगे भी वही जिन्होंने कल्प2 समझा है। यह सारा ज्ञान बच्चों की स्मृति में होना चाहिए बाबा में नालेज है ना। इसमें प्रवेश कर तुमको भी नालेज देते हैं। तुम सभा में भी कह सकते हो इस मनुष्य सृष्टि रूपी/कल्प वृक्ष की नालेज हम दे सकते हैं। उनका बीज ऊपर में है जिसको सत-चित नालेजफुल कहते हैं। उनके पास जो सारी नालेज है वह हम जानते हैं। बाप ने हमको समझाया है ऐसे2 समझाना है जो समझे बराबर यह ज्ञान तो बाप ही दे सकते हैं। इस ज्ञान से ही सभी की सदगति होती है। पानी के गंगा पर भक्त लोग जाकर बैठते हैं समझते हैं हम पावन बन जावेंगे। तुम नहीं बैठेंगे। तुम समझते हो ज्ञान और भक्ति में रात दिन का फर्क है। अभी इस पतित दुनिया का ही अन्त है। अभी तो वापस जाना है।

यह नालेज ही है ईश्वरीय ज्ञान रत्न। जिससे शिव बाबा का भण्डारा भरपूर है। तुमको यह ज्ञान रत्न देते है जिससे तुम वह बनते हो। अभी कोई लेवे और धारणा की। म्युजियम में जाकर कहते हैं ना झोली भर दो। मंदिर में जाकर कहते हैं ना झोली भर दो। लक्ष्मी के आगे कब ऐसे नहीं नहीं कहेंगे। उनकी पूजा करते हैं समझते हैं लक्ष्मी धन देती है। इन सभी बातों को तो मनुष्य समझते ही नहीं। अभी तुम बच्चे समझते हो हम भी कितने बेसमझ थे। अभी सतोप्रधान समझदार बन रहे हैं। फिर से हम देवता बनेंगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तो है ही। नालेज कितनी सहज है। सृष्टि चक्र को जानना यही तो नालेज है ना। अर्थात स्व आत्मा चक्रधारी बनती हैं। उनमें सारी नालेज है और कोई कह न सकेंगे तुम स्वदर्शनचक्रधारी हो। वह तो अर्थ ही नहीं समझते। उन्होंने फिर समझा है स्वदर्शनचक्र से सभी का गला कटता है। चक्र विष्णु को और कृष्ण को देते हैं। ऊंच ते ऊंच को फिर नीचे बीच अहिंसक बना दिया है। भारत का ही स्वर्ग नाम था। अभी क्या बन गया है। अभी तुम बच्चे समझते हो बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। अविनाशी ज्ञान रत्नों से भण्डारा भरपूर हो जाता हैं। जिससे तुम मालामाल बनते हो। और कोई चीज नहीं देते हैं। ज्ञान से ही सदगति होती है। तुमको इस सारे चक्र का मालूम है। तुम मोस्ट वैल्युएबुल हो। तुम्हारे जैसा वैल्युएबल कोई नहीं। पढ़ाई से तो मेहतर भी एम पी बन जाते हैं। फिर सभी इकट्ठे रहते हैं। मालूम थोड़ेही पड़ता है। फिर मेहतरपना कहां चला जाता है। तुम्हारी फिर मेहतर पना है भार खोन का। अच्छा तुम्हारा तो बड़ा ही मजे का ज्ञान है। नालेज से ही खुशी होती है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।

पायन्टस :-ईश्वरीमत और मनुष्य मत। ईश्वरीयमत से तुम देवता बनते हो। 2। जन्म बाद फिर मनुष्य मत लेते हो। मनुष्य मत, देवता मत और ईश्वरीयमत। ईश्वरीयमत मिलती है संगमपर। जिससे तुम देवता बनते हो। वहां तो सुख ही सुख है। देवतामत का वर्णन किया जाता है। ईश्वरीयमत मनुष्य मत से देवता मत बनाती हैं। मनुष्य मत है रावण की मत। एक मानव मत का पंथ भी चलता है। देहली में एक पुराना जज सुहेना था उसने मानवमत स्थापन किया है। देवीमत तो स्थापन कर न सके जब कि ईश्वरयमत न मिली है। यह बातें शास्त्रों में नहीं हैं। ऐसी2 बातें शास्त्र पढ़े हैं तो सिध कर सकते हैं। फलाने वेद में यह बातें हैं। ज्ञान से टाला हो है। पढ़े हैं तो वह आधार भी लेते हैं। मुख्य बात है एक ही मन्मनाभव। गीता ही भारत का मुख्य धर्मशास्त्र है जिस द्वारा ही दैवी देवता धर्म की स्थापना होती है। इनको गीता का एपीसोड कहा जाता है। तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना है। बहुत प्यार से चलना है। अभी तुमको ईश्वरीयमत मिलती है। बाप कितना सहज समझाते हैं अपने को आत्मा समझो। अभी वापस चलना है। जो यहां सुखी है वह बाप को याद भी नहीं करते। बाप कहे वाराजधारा है। साहूकार गरीब गरीब साहूकार बनेंगे। पिछाडी में मायाके राज्य में आवेंगे। तुमको 2। जन्म का सुख मिलता है। बाबा ने कूटपूराना लिया है तुम भी पूरा कूट खरीद कर देखो।